जनवाणी

परम्श्रद्धेय श्री केशरी नाथ त्रिपाठी जी,

माननीय मुख्य न्यायधीश श्री गोविन्द माथुर जी,

उपस्थित देवियों और सज्जनों।

आज हमारे परम पूजनीय पूर्व पुरूष न्यायमूर्ति श्री प्रेम शंकर गुप्ता जी का जन्मोत्सव है। यह उत्सव उनके परिवार द्वारा विकसित इस वाटिका में जिसे मुरारी बापू ने "प्रेम वाटिका" की संज्ञा दी है में हम मना रहे हैं।

न्यायमूर्ति गुप्त जी का जीवन संस्कारों और सिद्धान्तों की पाठशाला था। इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रुप में चार हजार से भी अधिक निर्णय हिन्दी में लिखने वाले वे देश के कदाचित पहले हाईकोर्ट जज थे। जीवन भर वे साहित्यिक समूह में ही रहे। खुशी की बात यह है कि गुप्त जी के सुपुत्र न्यायमूर्ति अशोक कुमार ने इलाहाबाद उच्च न्यायालय के न्यायाधीश के रुप में जो निर्णय/आदेश हिन्दी में दिये उनका संकलन एक पुस्तक के रुप में प्रकाशित किया है। जिसका लोकार्पण आज प्रयाग में गंगा तट पर बने हिन्दी प्रेम वाटिका में स्थापित श्रद्धेय गुप्त जी की प्रतिमा के समक्ष इलाहाबाद उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति गोविंद माथुर जी कर रहे हैं। एक हिन्दी निष्ठ पिता को उनके पुत्र द्वारा इससे अच्छी श्रद्धांजलि भला क्या हो सकती है। न्यायमूर्ति प्रेमशंकर गुप्त जी का स्मरण हमारी निष्ठा और हिन्दी प्रेम को और शक्तिवान बनाता है।

आज जन्म तिथि पर उनको बारम्बार नमन।

वैसे तो गुप्त जी के परिवार से मेरा व मेरे परिवार का हमेशा से घनिष्ठ सम्बन्ध रहा है पर न्यायमूर्ति अशोक जी से शायद हम उम्र होने के कारण मेरा विशेष लगाव रहा है जैसा उनका नाम है उसी के अनुरूप उनके साथ रहते हुए कभी भी मुझे शोक का सामना नहीं करना पड़ा।

पावन मंगल आचरण, निर्मल निर्मित मान।

ज्ञानी साथी कर सके, हर दुविधा आसान।।

उपरोक्त कही गयी दो पंक्तियाँ जीवन का सार प्रस्तुत करती है। हर किसी के जीवन में कोई ना कोई ऐसा मित्र रहा होगा जो उसे सबसे प्रिय रहा होगा और जिसे देखकर समस्त परेशानियों का हल भी मिल गया होगा। ऐसे ही मेरे सखा श्री अशोक कुमार जी हैं।

श्री अशोक कुमार जी जो कि अब उच्च न्यायालय से सेवानिवृत्त हो चुके हैं, अब एक

नये जीवन की ओर अग्रसर हो रहे है।

अब श्री अशोक कुमार जी लेखक और सामाजिक उत्थान के जीवन की शुरुआत करने जा रहे है।

आज इस मंच पर आकर और इस पुस्तक के विमोचन के कार्यक्रम में शामिल होकर बहुत ही सुखद अनुभूति हो रही है और मैं गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं।

इन्ही शब्दों के साथ मैं अपनी वाणी को विराम देता हूं।

जय हिन्द।

जय भारत।।

(पंकज मित्थल)

(माननीय न्यायमूर्ति श्री अशोक कुमार जी दृारा लिखित पुस्तक के विमोचन में दिनांक 30/09/2020 को **प्रेम वाटिका** नैनी, प्रयागराज में मा0 न्यायमूर्ति श्री पंकज मित्थल जी का सम्बोधन)